समाज विकासमाला

गोरा-बादल

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

समाज विकास-माला : ९७

गोरा-बादल

त्याग, बलिदान और वीरता की कहानी

लेखक
सुन्दरलाल त्यागी

सम्पादक
यशपाल जैन

१९५९

सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल
नई दिल्ली

पहली बार : १९५९
मूल्य
सैंतीस नये पैसे

मुद्रक
रामाकृष्णा प्रेस
दिल्ली.

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जब से ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इसमें कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषय का चुनाव बड़ी सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रखा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में किसी सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

—मन्त्री

पाठकों से

इस पुस्तक में गोरा-बादल की वीरता और बलिदान की बड़ी ही भावपूर्ण कहानी दी गई है। ये दोनों वीर राजवंश के थे और इनका नाम मेवाड़ के इतिहास में सुनहरे अक्षरों में लिखा हुआ है।

उन्होंने जो कुछ किया, वह आज भी शिक्षा देने-वाला है। उन्होंने अपने बलिदान से बता दिया कि हर-एक देशवासी के लिए सबसे मूल्यवान वस्तु देश का मान है। उसकी रक्षा के लिए प्राण भी देने पड़ें तो पीछे नहीं हटना चाहिए।

आज के युग में वीरता की कसौटी बदल गई है, लेकिन देश की मान-मर्यादा की कसौटी कभी नहीं बदलती।

हमें आशा है कि इस पुस्तक को पढ़कर पाठक प्रेरणा लेंगे।

—सम्पादक

गोरा-बादल

हमारे देश में ऐसे अनेक महापुरुष हुए हैं, जिनकी गाथाएं सुनकर भारतवासी ही नहीं, दूसरे देशों के लोग भी चकित रह जाते हैं। किसीने ऊंचे दर्जे का त्याग किया तो किसीने बलिदान, किसीने सेवा की मिसाल दुनिया के सामने रक्खी तो किसीने देश-प्रेम की, किसीने भलाई के काम किये तो किसीने अपनी वीरता से इतिहास के पन्नों में अपना नाम लिखा लिया।

आज हम आपको ऐसे ही महापुरुषों का हाल सुनावेंगे, जिनके त्याग, बलिदान और वीरता की कहानी आज भी रोंगटे खड़ी कर देती है।

: १ :

चित्तौड़ की भूमि को कौन नहीं जानता ! उसकी वीरता और त्याग की घटनाओं से हमारे इतिहास के

जाने कितने अध्याय भरे पड़े हैं। जिस समय की बात हम कह रहे हैं, उस समय चित्तौड़ पर महाराणा रत्नसेन का अधिकार था। उनके पद्मावती नाम की बहुत ही रूपवती रानी थी।

पद्मावती के एक चाचा था, जिसका नाम बादल था। कहते हैं, बचपन से ही उसकी आवाज बड़ी तेज थी। बादल की तरह गर्जना करती थी। इसीलिए उनकी मां ने उसका यह नाम रख दिया। प्यार से सब उसे बादल कहते थे। बड़े होने पर उसने तीर



वीर बादल

चलाना, घोड़े की सवारी करना, तलवार चलाना आदि-आदि बातें सीखीं और उनमें इतना होशियार हो गया कि जो भी देखता, दंग रह जाता।

बादल के एक भतीजा था, जिसका नाम था गोरा। अपने चाचा की भांति गोरा भी बड़ा बहादुर था, लोग दोनों को मिलाकर एक मानते थे।

दिल्ली पर इस समय खिलजी बादशाह अलाउद्दीन का राज्य था। अलाउद्दीन वैसे बड़ा वीर था, पर उसकी आदतें अच्छी न थीं। वह बुराइयों में डूबा रहता था। किसी युवती की सुन्दरता का बखान सुनकर वह पागल हो उठता था और प्यार से या छल-कपट से, सुलह से या लड़ाई से जैसे भी हो, उसे पाने के लिए पूरी कोशिश करता था।

संयोग से महाराज रत्नसेन की रानी के रूप की चर्चा चित्तौड़ के किले की ऊंची-ऊंची दीवारों के भीतर तक ही न रह सकी, अलाउद्दीन के कानों में भी पहुंची। कहते हैं, घर की कमजोरी आदमी को बरबाद कर देती है। धन के लोभ से रत्नसेन का ही एक आदमी अलाउद्दीन से जा मिला। उसने पद्मावती के लावण्य की प्रशंसा करके अलाउद्दीन की आग में घी

का काम दिया। अलाउद्दीन का अपने पर काबू न रहा और पद्मावती को पाने की इच्छा से वह एक बहुत बड़ी सेना लेकर चित्तौड़ की ओर चल पड़ा।

अलाउद्दीन की चढ़ाई की खबर चित्तौड़ पहुंची तो लोगों की आखें खुल गईं। राजा रत्नसेन तो मारे गुस्से के लाल-पीले पड़ गये। उन्हें अपने राज की और धन की उतनी चिंता न थी, जितनी कि अपनी राजपूती शान की और उससे भी बढ़कर अपनी प्राण-प्रिया की। रह-रहकर उन्हें एक ही ख्याल आता था कि अलाउद्दीन की इतनी हिम्मत कैसे हुई कि उसने उनकी रानी पर बुरी निगाह डाली।

अलाउद्दीन की सेनाएं चित्तौड़ आ पहुंची और उन्होंने नगर का घेरा डाल लिया। इधर महाराणा की फौजें भी दुश्मन की ललकार सुनकर लड़ाई के मैदान की ओर चल पड़ीं।

अलाउद्दीन के साथ बहुत बड़ी सेना थी, हथियार थे, फिर भी जब उसने राजपूतों का जोश देखा तो उसका दिल दहल गया और उनकी तैयारियां देखकर तो उसके होश ही उड़ गये। उसने समझ लिया कि

लड़ाई में काफी नुकसान होगा। लड़ने के इरादे से वह आया भी नहीं था। उसका इरादा तो पद्मावती को उड़ाना था। फिर भी कई दिन तक दोनों ओर की सेनाओं में युद्ध होता रहा। वीर राजपूत दिल खोलकर लड़े और उनके आगे अलाउद्दीन की फौजों का टिकना मुश्किल हो गया। तब परेशान होकर अलाउद्दीन ऐसा उपाय खोजने लगा, जिससे लड़ना भी न पड़े और काम भी बन जाय। सोचते-सोचते उसे एक चाल सूझी। उसने राजा रत्नसेन के पास खबर भेजी कि अगर आप मुझे पद्मावती की सूरत शीशे में दिखला दें तो मैं देखकर वापस चला जाऊंगा।

राजा रत्नसेन ने यह खबर पाकर सोचा कि लड़ाई का क्या भरोसा कि आखिर में किसकी जीत हो! अपनी जीत हो भी जाय तब भी कुछ-न-कुछ खून तो और बहेगा ही। अलाउद्दीन की बात मान लेने से मामला सहज ही निपट जायगा। यह सोचकर उन्होंने अलाउद्दीन का प्रस्ताव मान लेना ही ठीक समझा। प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया।

जब यह खबर अलाउद्दीन को मिली तो वह बहुत प्रसन्न हुआ। बड़े ठाट-बाट के साथ वह रत्न-

सेन के यहां आया। रत्नसेन ने उसका स्वागत किया। ऐसी व्यवस्था की गई थी कि पद्मावती की सूरत एक



अलाउद्दीन ने पद्मावती को शीशे में देखा

बड़े आइने में दिखाई दे जाय। अलाउद्दीन वहां गया और पद्मावती को देखकर लौट चला।

सबको लगा कि अच्छा हुआ, बला टल गई, लेकिन किसीने सपने में भी नहीं सोचा था कि विधाता को कुछ और ही मंजूर है।

जिस समय रत्नसेन अलाउद्दीन को विदा करने के लिए नगर के बाहर आये, अलाउद्दीन ने उन्हें पकड़वा लिया और रानी को कहला भेजा कि तुम्हें घबराने की जरूरत नहीं है। अगर तुम चाहती हो कि राजा को छोड़ दूं तो उसका एक ही रास्ता है, और वह यह कि तुम मेरी दासी बन जाओ।

रत्नसेन की गिरफ्तारी का समाचार बात-की-बात में सारे नगर में फैल गया। रानी ने सुना तो उसे इतना धक्का लगा कि वह मूर्च्छित होकर गिर पड़ी।

: २ :

कहते हैं, एक ओर यह सब हो रहा था, दूसरी ओर बादल अपना विवाह करके उसी दिन चित्तौड़ लौटा। उसका मन और ही कहीं रमा था। नया ब्याह, नई बहू। उसके दिल में प्यार का सागर लहरा रहा था। अबतक उसने दुनिया की क्रूरताएं ही देखी थीं और देखे थे लड़ाई-झगड़े और द्वेष। लेकिन अब कुछ दूसरा ही समय आ गया था। वह दुनिया के एक नये पहलू को देख रहा था।

लेकिन नगर में घुसते ही उसे खबर मिली कि अलाउद्दीन चित्तौड़ पर चढ़ आया है और उसने चालाकी से रत्नसेन को गिरफ्तार कर लिया है। उसने यह भी सुना कि रानी पद्मावती को उसने संदेशा भेजा है कि अगर वह उसकी दासी बनना कबूल कर ले तो वह राजा को छोड़ सकता है।

इस समाचार को सुनकर बादल को थोड़ा विचित्र-सा लगा। लेकिन उसके मनमें उठे विचार जरा-सी देर में गायब हो गये। उनका दिल तो नई दुलहिन में रमा था। जो व्यक्ति हर घड़ी वीरता की बातें सोचता रहता था और सपने में भी लड़ाई का भयंकर कोलाहल सुनता रहता था, वह आज प्यार की मीठी बातें सुन रहा था। ऐसा लगता था, मानो उसके पीछे के जीवन पर पर्दा पड़ गया था और एक नया ही अध्याय उसके सामने खुल गया था।

उधर पद्मावती होश में आई तो उसे चारों ओर अंधेरा-ही अंधेरा दिखाई दिया। अबतक वह राजा के साये में रही थी, पर अब राजा तो दुश्मन के हाथों में था। ऐसे आड़े समय में वह क्या करे? दुश्मन की फौजें नगर के बाहर पड़ी थीं। ऐसे में उसकी मदद

करने की हिम्मत कौन करेगा ?

रानी सोचती रही, सोचती रही। लेकिन उसे कोई रास्ता नहीं सूझता था। उसका सिर चकरा रहा था। पर उसे फौरन कोई-न-कोई फैसला करना था। अलाउद्दीन का प्रस्ताव उसके सामने था। कुछ देर हुई तो हो सकता था कि दुश्मन आगे कोई और कदम उठाले।

इसी समय रानी का ध्यान अचानक गोरा-बादल की ओर गया। वह जानती थी कि वे दोनों बड़े वीर हैं। अकेले ही दुश्मन के छक्के छुड़ा सकते हैं। वह उनके पास क्यों न जाय ? अंधेरे में आशा की एक किरण चमक उठी।

सचमुच रानी के लिए वह बड़ी ही भयंकर घड़ी थी। अगर उस समय बचने का रास्ता न निकल सका तो आगे और भी मुसीबतें आनेवाली थीं। रानी उस तूफान को साफ देख रही थी।

आखिर सोच-विचार के बाद उसने निश्चय किया कि कुछ भी हो, मैं स्वयं गोरा-बादल के पास जाऊँगी और उनसे कहूंगी कि तुम बहादुर हो, अपनी भूमि को

बचाओ, बहन-बेटियों की लाज रक्खो ।

बस यह सोचकर रानी ने तत्काल पालकी मंगवाई और उसमें सवार होकर बादल के घर पहुंची । वहां



रानी पद्मावती पालकी में बैठकर गोरा-बादल के पास चल दी ।

पहुंचकर उसने बादल के पास अपना संदेशा भिजवाया ।

बादल तो उस समय मोह में डूबा था, उसकी आँखों पर वासना का पर्दा पड़ा था । उसने तत्काल

रानी से कहलवा दिया कि वह लौट जायं। वह उनके लिए कुछ नहीं कर सकेगा।

रानी ने यह समाचार सुना तो उसे दुःख जरूर हुआ, लेकिन अचरज नहीं। वह जानती थी कि वासना की आग को आसानी से नहीं बुझाया जा सकता। वह बड़ी हैरान हो गई। अब वह क्या करे?

उसी समय बादल की मां को पता चला कि रत्न-सेन की रानी पद्मावती उसके दरवाजे पर आई थी और आंचल फैलाकर मदद मांग रही थी। लेकिन बादल ने उसकी मांग को ठुकरा दिया। वह स्त्री थी और एक स्त्री के दर्द को अच्छी तरह समझ सकती थी। फिर यह भी तो था कि आत्म-सम्मान को एक ओर रखकर रानी पद्मावती उसके द्वार पर आई थी! अपनी शरण में आये की रक्षा करना सबका धर्म है!

उसने फौरन बादल को बुलाया। बादल भीतर गया तो मां का तमतमाया चेहरा देखकर सहम गया। मां ने कड़ी आवाज में कहा, "क्योंरे बादल, तूने रानी को मदद देने से इंकार कर दिया? इससे ज्यादा बुरी बात भला और क्या हो सकती है? मैं आदमी होती

तो ऐसा कभी न करती और कभी की रण-भेरी बज गई होती।"

बादल चुपचाप मां की बात सुनता रहा। उसने अनुमान भी नहीं किया था कि कोई मां अपने बेटे को उस दुलहिन से अलग होने की बात कह सकती है, जिसके हाथ की मेंहदी भी नहीं सूख पाई थी और जिसके मांग के सिंदूर की चमक ज्यों-की-त्यों बनी थी!

बादल यह भूल गया कि राजस्थान की इसी भूमि में ऐसी-ऐसी वीर स्त्रियां हुई हैं, जिन्होंने अपने सुख को तिलांजलि देकर अपने पति को अपने कर्तव्य का पालन करने के लिए खुशी-खुशी मौत के मुंह में भेज दिया है।

मां कह रही थी, "मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि तू इतनी कायरता दिखायेगा। दुश्मन घर में घुस आया है और मां-बहनों की इज्जत लूटी जा रही है। तू भोग में पड़ा है और ऐसे आड़े समय में सुख की नींद ले रहा है!"

इतना कहते-कहते मां की आवाज और तेज हो उठी। उन्होंने गरजकर कहा, "तूने हमारे वंश के नाम

पर कालिख पोत दी। ऐसे कपूत की मां कहलाने में मुझे लाज आती है। जा, मेरी आँखों के सामने से हठ जा।"



"जा, मेरी आँखों के सामने से हट जा।" बादल की मां गरज उठी।

बादल मां की फटकार चुपचाप सुनता रहा। जब उसने आखिरी बात सुनी तो उसकी आंखें खुल गईं। उसने कहा, "मां, बस रहने दो। मैं अबतक सचमुच गफलत में था। मां-बहनों की इज्जत से बढ़कर दुनिया में और कोई भी चीज ज्यादा प्यारी नहीं हो सकती।

तुमने मेरी आंखें खोल दीं। विश्वास रखो कि जबतक बादल जीवित है तबतक पद्मावती का कोई भी बाल-बांका नहीं कर सकता। मुझे इस बात का बड़ा दुःख है कि घर आई देवी को मैंने अपमानित करके लौटा दिया। उसका बदला बिना चुकाये मुझे चैन नहीं पड़ेगा।"

मां ने कहा, "बेटा बादल, कर्तव्य से बढ़कर दुनिया में और कोई चीज नहीं हो सकती। मुझे बड़ी खुशी है कि आखिर तेरी आँखें खुल गईं।"

इसके बाद बादल ने जो किया, वह वही था जो किसी वीर पुरुष को करना चाहिए। उसने पीछे मुड़कर नहीं देखा। एक क्षण को भी यह नहीं सोचा कि नई दुलहिन उसकी राह देखती होगी। फौरन सेना को तैयार होने की आज्ञा दी और नगाड़ों पर चोट करवाई।

: ३ :

कुछ लोगों का कहना है कि यह घटना दूसरी तरह से है। अलाउद्दीन का जब समाचार मिला तो फौरन दरबार लगा। उसमें सभी लोग इकट्ठे हुए।

कुछने कहा कि हमें बादशाह की बात कभी भी नहीं माननी चाहिए और डटकर उसकी सेना का मुकाबिला करना चाहिए। लेकिन कुछने कहा कि बादशाह के पास बहुत बड़ी सेना है। उससे जीतना कठिन है, इसलिए पद्मावती को उसके पास भेज देना चाहिए। महाराजा छूट जायं, यह बहुत जरूरी है।

दरबार में गोरा-बादल भी मौजूद थे। उन्होंने लोगों की बातें सुनी तो उन्हें बड़ी चोट लगी। उनकी आँखों से आग की चिनगारियां झरने लगीं। उनके शरीर से वीर-रस की धारा बहने लगी। लेकिन बड़े-बड़े नायकों के सामने वे चुप रहे, बोले कुछ नहीं।

रानी आड़ में बैठी सारी बातें सुन रही थी। जब उसने तरह-तरह की चर्चाएं सुनीं और देखा कि लोग एक राय नहीं हो रहे हैं तो वह क्रोध से लाल-पीली होकर सबके सामने आगई। कांपती हुई बोली, "तुम्हें लाज नहीं आती। तुम्हारी आँखों के सामने तुम्हारी मां-बहनों की दुर्दशा हो रही है! तुम क्षत्राणियों के दूध को कलंकित कर रहे हो! धिक्कार है तुम्हारे जीवन को!"

दरबार के लोगों को काटो तो खून नहीं। वे

गर्दन नीची किये रानी की बातें सुन रहे थे।

रानी ने गरजकर कहा, "तुम लोग चुप क्यों हो? जो करना है, जल्दी करो। देखो, कपटी को कपट से जीतना आसान होता है। बादशाह को कहलवा दो कि मैं आ रही हूं। मैंने युक्ति सोच ली है।"

महारानी के वचन सुनते ही दो नौजवान उठ खड़े हुए। ये थे गोरा-बादल। उनके चेहरे तमतमा रहे थे। उन्होंने रानी के सामने आकर कहा, "महारानी, आप हमें अब अधिक लज्जित न करें। हम शपथ खाकर कहते हैं कि हम राणा को दुश्मन के हाथों से छुड़ाकर लायंगे, नहीं तो हम रणभूमि में सदा के लिए सो जायंगे।"

महारानी की ललकार और गोरा-बादल की शपथ से दरबार के सारे लोग चौंक पड़े। उन्होंने रानी का जयकार किया और बोले, "महारानी, आप धन्य हैं! आपने हमें रास्ता दिखा दिया। आप जो कहेंगी, हम वही करेंगे।"

महारानी ने कहा, "अब देर न करो। बादशाह को खबर भिजवाओ और पालकियां तैयार करवाओ। हर पालकी में एक-एक जवान राजपूत हथियार लेकर

बैठे। पालकी चारों ओर से बंद रहे, जिससे किसी को भेद न मालूम हो। पालकियों को उठाने के लिए कहारों की जगह चुने हुए सैनिक लगें। मेरी पालकी में एक वीर राजपूत को जनाने कपड़े पहनाकर बिठाया जाय।"

रानी अपनी बात कहे जा रही थी। सब लोग चुपचाप सुन रहे थे और रानी की चतुराई को सराह रहे थे।

रानी ने आगे कहा, "किले से सारी पालकियां सवेरे ही रवाना हो जायं और जब वे दुश्मन के डेरे में पहुंच जायं तो एक आदमी जाकर बड़ी नरमाई से बादशाह को खबर दे और महाराणा को छोड़ने को कहे। जैसे ही महाराणा छूटकर घोड़े पर सवार हो जायं, वीर राजपूत पालकियों में से निकलकर दुश्मन की फौजों प र टूट पड़ें। वे फौजें उस समय लड़ने को तैयार नहीं होंगी। नतीजा यह होगा कि हमारे थोड़े-से सैनिक शत्रु की बहुत बड़ी सेना को नष्ट कर डालेंगे। क्यों, ठीक है न ?"

सारे दरबारियों ने एक स्वर से रानी की बात स्वीकार की।

फिर क्या था, तत्काल अलाउद्दीन को खबर भेजी गई और इधर पालकियां तैयार होने लगीं।

: ४ :

अलाउद्दीन तो पद्मावती को पाने के लिए बहुत ही अधीर हो रहा था। उसे जैसे ही खबर मिली कि पद्मावती आ रही है, वह खुशी में झूम उठा। पालकियां आईं। अलाउद्दीन से पहले ही कह दिया गया था कि पद्मावती महारानी हैं, इसलिए अपनी सहेलियों और दासियों के साथ आयेंगी। सो पालकियों को इतनी बड़ी संख्या में देखकर अलाउद्दीन ने कोई शंका की नहीं और उन्हें बेखटके आने दिया। हर पालकी को उठाने के लिए कहारों की जगह वीर राजपूत लगाये गये थे।

जब सारी पालकियां दुश्मन के पड़ाव पर पहुंच गईं तो नशे में चूर अलाउद्दीन उन्हें देखकर आनंद से फूल उठा।

उसी समय राजवंश के वीर युवक गोरा-बादल ने अलाउद्दीन के पास जाकर खबर दी कि महारानी पद्मावती आ गई हैं। आपसे विनय करती हैं कि महा-

राणा को आप छोड़ दें और घड़ी भर के लिए उनसे मिल लेने दें।

अलाउद्दीन ने सोचा कि महारानी अब तो मेरे कब्जे में आ गई हैं, निकलकर कहां जा सकती हैं। उसने फौरन महाराणा को छोड़ने का हुक्म दे दिया।

महाराणा को छोड़ दिया गया। लेकिन जैसे ही महाराणा ने पालकियों को देखा, उन्हें क्रोध हो आया। उसी समय आंखों के इशारे से उन्हें रोक दिया गया। उनके लिए घोड़ा तैयार था। उसपर बिठाकर उन्हें चित्तौड़ को रवाना कर दिया गया।



सातसो जवान राजपूत डोलियों से निकलकर दुश्मन की फौज पर टूट पड़े

राणा के जाते ही डोलियों के पर्दे हटे और उनमें से निकलकर राजपूत बाहर आ गये। सातसौ जवान राजपूत दुश्मन की सेना पर एक साथ टूट पड़े।

अलाउद्दीन के लोगों ने यह देखा तो वे चकित रह गये। अलाउद्दीन का नशा काफूर हो गया।

फिर तो वह स्थान रण-भूमि बन गया। राजपूत इने-गिने थे, लेकिन उनकी वीरता देखते ही बनती थी। उधर बादशाह के लोग कुछ देर तक तो खोये-से रहे, बाद में वे भी लड़ाई में कूद पड़े।

कैसा संयोग था ! जहां थोड़ी देर पहले मंगल हो रहा था, वहाँ अब खून की नदी बहने लगी !

राजपूत पूरे बल से लड़ रहे थे। वे जानते थे कि अगर उन्होंने लड़ाई में तनिक भी कसर रक्खी तो उसका नतीजा बड़ा भयंकर होगा।

गोरा-बादल की वीरता तो बेजोड़ थी। जैसे किसान हंसिये से खेत काटता है, उसी तरह उनकी तलवारें दुश्मनों के सिर उड़ा रही थीं। उनकी बरछी के आगे कोई भी नहीं ठहर पाता था। उनके बाणों ने तो जाने कितने हाथी-घोड़ों को मौत की गोद में

सुला दिया था। घोड़ों की हिनहिनाहट, हाथियों की चिंघाड़, वीरों का नाद और घायलों की कराह, बड़ा डरावना दृश्य उपस्थित कर रहे थे।

सचमुच लड़ाई का रूप बड़ा बुरा होता है। आदमी पागल हो उठता है। वह अपना आपा खो देता है। उसमें बेकसूर लोगों की जानें जाती हैं। अपार हानि होती है। तभी तो भले लोग लड़ाई को बहुत बुरा समझते हैं।

अलाउद्दीन की फौजें तैयार होकर मैदान में कूदीं तबतक राजपूतों के पैर जम चुके थे। नतीजा यह हुआ कि अलाउद्दीन के लश्कर के पैर उखड़ने लगे। उसी समय उन्हें सहारा देने के लिए बहुत-से घुड़-सवार आ गये। उखड़ती लड़ाई फिर जम गई।

यह देखकर गोरा-बादल की भृकुटि तन गई। उनमें अकूत बल आ गया। गोरा ने दुश्मन के एक सवार को मार गिराया और स्वयं उसके घोड़े पर सवार हो गया। बादल ने भी ऐसा किया। वे दोनों अब तेजी से इधर-उधर दौड़ने लगे और दुश्मन के छक्के छुड़ाने लगे। वे जिधर जाते, बिजली-सी दौड़ जाती, मैदान साफ हो जाता।

बादशाह की फौज के सैकड़ों लोग मौत के घाट उतर गये। जो बचे, उनमें घबराहट पैदा हो गई। उनके पैर उखड़ने लगे और अंत में वे मैदान छोड़कर भागने लगे।

अलाउद्दीन को यह खबर मिली तो वह क्रोध से आग-बबूला हो गया। उसके पास कुछ मस्त हाथी अब भी बचे थे। वे उसने छुड़वा दिये। छूटते ही हाथी लड़ाई के मैदान में आ पहुंचे और लगे संहार करने।

गोरा ने यह देखा तो दोनों हाथों में तलवारें ले लीं और उन्हें घुमा-घुमाकर हाथियों के रुण्ड-मुण्ड काटने लगा।

उधर बादल ने देखा कि गोरा अकेला मस्त हाथियों से जूझ रहा है तो वह भी मदद के लिए आ गया। दोनों वीरों की तलवारें काले-काले बादलों के बीच बिजली की भांति चमकती थीं और उनका वार कभी चूकता नहीं था।

अलाउद्दीन की फौजें परास्त हो गईं। सैनिकों के अलावा बहुत से घोड़े और हाथी भी मारे गये। जो बचे वे गोरा-बादल की मार से बेहाल हो गये। वे भागने का इरादा करने लगे।

: ५ :

कई दिन तक लगातार युद्ध होता रहा। गोरा-बादल की वीरता के आगे कई बार अलाउद्दीन की फौजों को घुटने टेक देने पड़े। राजपूतों की संख्या गिनी-चुनी थी, फिर भी अलाउद्दीन की सेना को उन्होंने तहस-नहस कर डाला।

राजपूतों की भी बड़ी हानि हुई। उनके सैनिक घटने लगे। बहुत वीर सामंत खेत रहे। फिर भी गोरा-बादल का उत्साह कम न हुआ। उन्हें रह-रह कर याद आता था कि जैसे भी हो, पद्मावती की लाज रखनी है और दुश्मन से अपमान का बदला लेना है।

जिस समय दोनों वीर बड़े जोरों से लड़ रहे थे, अचानक एक हथिनी पीछे से आई और उसने गोरा पर वार किया। गोरा तो फुर्ती से बच गया, पर उसका घोड़ा चक्कर में आगया और उसकी सूंड़ के दबाव से चीखकर हमेशा के लिए शांत हो गया। गोरा ने तलवार से हथिनी की सूंड़ के टुकड़े-टुकड़े कर डाले।

हाथियों ने अब चारों ओर से गोरा को घेर लिया।

लेकिन इससे वह वीर न घबराया, न परेशान हुआ, बल्कि उसका जोश और बढ़ गया। उसने बहुत-से हाथियों को मार गिराया।

लेकिन आखिर आदमी की शक्ति की सीमा होती है। गोरा के शरीर में कई घाव हो गये थे। जरा-सी देर सुस्ताने के लिए वह जैसे ही रुका कि एक तीर उसके सीने पर आकर लगा और इस प्रकार वीरता की मूर्ति गोरा के जीवन का अंत हो गया।

कहते हैं, तब अकेले बादल ने दुश्मन का मुकाबला किया और उसके दांत खट्टे कर दिये। उसे मैदान से भगा दिया और जीत कर रानी के पास आया।

कुछ लोगों का यह भी कहना है कि बादल बड़ी बहादुरी से लड़ता रहा, लेकिन एक दिन अचानक दुश्मन की सेना से एक तीर आकर उसकी आँख में लगा। उस चोट से बादल अपने को न सम्भाल सका और घोड़े से नीचे गिर पड़ा।

तीर इतना गहरा लगा था कि थोड़ी देर में बादल के प्राण-पखेरू उड़ गये। मरते समय उसके हृदय में कोई मलाल न था, बल्कि इस बात का संतोष था कि अपने कर्तव्य को पूरा करते हुए उसके प्राण निकले।

: ६ :

जिस समय लड़ाई चल रही थी, महारानी पद्मावती को बराबर पता चलता रहा कि गोरा-बादल लड़ाई के मैदान में उसकी रक्षा के लिए जी-जान से लड़ रहे हैं। उसका हृदय गर्व से और आनंन्द से फूल रहा था। वह दिल खोलकर उनकी मंगल-कामना कर रही थी। पर जब उसे गोरा-बादल के वीर-गति पाने का समाचार मिला तो वह कुछ देर तक स्तब्ध रही, मानों उसका शरीर बेजान हो गया हो। उसके बाद उसने किले की सारी स्त्रियों के लिए तैयार चिताओं में आग लगवादी और सब-की-सब स्त्रियां जलती चिताओं में कूद पड़ीं। उन्होंने जान दे दी, पर आन न छोड़ी।

कुछ लोगों का यह भी कहना है कि राजपूतों की जीत हुई और बादशाह की फौजें भाग गईं।

सचाई जो भी हो, लेकिन इसमें शक नहीं कि अपनी भूमि की मान-रक्षा के लिए, अपनी मां-बहनों की लाज बचाने के लिए, गोरा-बादल ने अद्भुत पराक्रम दिखाया, दुश्मनों की भारी सेना का मुकाबला किया। जीते या नहीं जीते, यह बात इतिहास के लिए

महत्व की हो सकती है, पर मानव-जाति के लिए तो महत्व इस बात का है कि उन्होंने अपने कर्तव्य से मुँह नहीं मोड़ा और देश के लिए वह त्याग और बलिदान किया कि उनका नाम सदा अमर रहेगा और उनका काम सदा प्रेरणा देता रहेगा।

प्रार्थना (वियोगी हरि)	०·५०
अयोध्याकाण्ड	१·००
भागवत-धर्म (ह. उ.)	६·५०
श्रेयार्थी जमनालालजी ,,	६·५०
स्वतंत्रता की ओर ,,	४·००
बापू के आश्रम में ,,	१·००
मानवता के झरने (माव.)	१·५०
बापू (घ. बिड़ला)	२·००
रूप और स्वरूप ,,	०·६२
डायरी के पन्ने ,,	१·८०
ध्रुवोपाख्यान ,,	०·२५
स्त्री और पुरुष (टाल्स्टाय)	१·००
मेरी मुक्ति की कहानी ,,	१·५०
प्रेम में भगवान ,,	२·००
जीवन-साधना ,,	१·२५
कलवार की करतूत ,,	०·२५
हमारे जमाने की गुलामी ,,	०·७५
बुराई कैसे मिटे ? ,,	१·००
बालकों का विवेक ,,	०·७५
हम करें क्या ? ,,	३·५०
धर्म और सदाचार ,,	१·२५
अंधेरे में उजाला ,,	१·५०
कल्पवृक्ष (वा० अग्रवाल)	२·००
साहित्य और जीवन	२·००
कब्ज (म० प्र० पोद्दार)	१·००
हिमालय की गोद में	२·००
कहावतों की कहानियां	२·००
राजनीति-प्रवेशिका	१·००
जीवन-संदेश (ख. जिब्रान)	१·२५
अशोक के फूल	३·००
लोकमान्य तिलक	२·५०
हमारा कानून	५·००
क्रांति की भावना	२·५०
तुकाराम-गाथा-सार	१·५०
कित्तूर की रानी	२·००
जीवन-प्रभात	५·००
कां० का इतिहास (२ भाग)	२०·००
पंचदशी (सं० य० जैन)	१·५०
सप्तदशी	२·००
रीढ़ की हड्डी	१·५०
अमिट रेखाएं	३·००
एक आदर्श महिला	१·००
राष्ट्रीय गीत	०·२५
तमिल-वेद (तिरुवल्लुवर)	१·५०
आत्म-रहस्य	३·००
थेरी-गाथाएं	१·५०
बुद्ध और बौद्ध-साधक	१·५०
जातक-कथा (आनंद कौ.)	२·५
हमारे गांव की कहानी	१·५०
अन्नों की खेती	२·००
दलहन की खेती	१·००
साग-भाजी की खेती	३·००
फलों की खेती	२·५०
पशुओं का इलाज (प. प्र.)	०·५०
रामतीर्थ-संदेश (३ भाग)	१·१२
रोटी का सवाल (क्रोपा०)	३·००
नवयुवकों से दो बातें ,,	०·३७
पुरुषार्थ (डा. भगवान्‌दास)	६·००
काश्मीर पर हमला	२·००
शिष्टाचार	०·५०
भारतीय संस्कृति	३·५०
आधुनिक भारत	५·००
मैं तन्दुरुस्त हूँ या बीमार	०·७५
भा० नवजागरण का इतिहास	३·००
गांधीजी की छत्रछाया	२·५०
भागवत-कथा	३·५०
जय अमरनाथ	१·५०
प्रगति के पथ पर (७ पुस्तकें)	१·७५
संस्कृत-साहित्य-सौरभ (३३ पुस्तकें) प्रति पुस्तक	०·३७
समाज-विकास-माला (८९ पुस्तकें) प्रति पुस्तक	०·३७

समाज विकास - माला की पुस्तकें

१. बदरीनाथ
२. जंगल की सैर
३ भीष्म पितामह
४ शिवि और दधीचि
५ विनोबा और भूदान
६ कबीर के बोल
७. गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८. गंगाजी
९. गौतम बुद्ध
१०. निषाद और शबरी
११. गांव सुखी, हम सुखी
१२. कितनी जमीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तंदुरुस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियां
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी - मानस - मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नजीर की नज्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेल की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा ?
४२. नरसी महेता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
४५. संत ज्ञानेश्वर
४६ धरती की कहानी
४७. राजा भोज
४८ ईश्वर का मंदिर
४९. गांधीजी का संसार-प्रवेश
५०. ये थे नेताजी
५१. रामेश्वरम्
५२. कब्रों का विलाप
५३. रामकृष्ण परमहंस
५४. समर्थ रामदास
५५. मीरा के पद
५६. मिल-जुलकर काम करो
५७. कालापानी
५८. पावभर आटा
५९. सवेरे की रोशनी
६०. भगवान के प्यारे
६१. हारूं-अल-रशीद
६२. तीर्थंकर महावीर
६३ हमारे पड़ोसी
६४ आकाश की बातें
६५. सच्चा तीरथ
६६. हाजिर जवाबी
६७. सिंहासन-बत्तीसी भाग १
६८ सिंहासन-बत्तीसी भाग २
६९. नेहरूजी का विद्यार्थी - जीवन
७० मूरखराज
७१. नाना फड़नवीस
७२. गुरु नानक

मूल्य प्रत्येक का छः आना

सस्ता साहित्य मण्डल

सैंतीस नये पैसे